Artistic Narration, Vol. VIII, 2017: ISSN (P) : 0976-7444 (e) : 2395-7247*Impact Factor 3.9651 (ICRJIFR)*
UGC Approved Journal No. 43285

परम्पराएंः भारतीय कलाओं की नींव

विभा लोधी
Freelance Artist, New Delhi

Reference to this paper should be made as follows:

विभा लोधी, "*परम्पराएंः भारतीय कलाओं की नींव*"
Artistic Narration 2017, Vol. VIII, No.1, pp. 117- 121
http://anubooks.com/?page_id=2325

सारांश

परम्परा किसी समाज की संस्कृति पर निर्भर होती है, युगो–युगो से चले आ रहे रीति–रिवाज़ो को ही परम्परा कहा जाता है। कला एवं परम्परा का सम्बन्ध अब का नहीं अपितु अतीत से आज तक चला आ रहा एक क्रम है। आज की परम्परा ही इस सदाबहार वृक्षरूपी कला की जड़े हैं। जिनका सहारा पाकर ही आज की कला इस उन्नति पर पहुँची है।

प्रस्तावना

क्या तुमने कभी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो बिना किसी बाहरी सहायता के अपने ही प्रयास से पैदा हो गया हो?

देगा के इस कथन से पारम्परिक कला से नीवन सृजन का सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है।[1] कला की आरम्भिक शिक्षा परम्पराओं के द्वारा ही प्राप्त की जाती है। यह परम्पराएं उसकी नींव का काम करती हैं जिस पर आज की कला खड़ी होकर पल्लवित हो सके। प्रत्येक देश, समाज, जातियों की अपनी भिन्न–भिन्न परम्पराएं होती है जिनका निर्वाह कर कलाएं आगे बढ़ती हैं।

जय देव का 'गीत–गोविन्द' पाण्डुलिपि परम्परा

जिस प्रकार शताब्दियों तक निरन्तर विचारों के मंथन से संस्कृति का विकास होता है उसी भांति परम्परा भी पीढ़ी दर पीढ़ी के अनुभवों का संचित कोश है इसमें विकास तथा प्रगति का तत्व अनिवार्य है।[2] परम्पराएं मानव जीवन का एक अनिवार्य क्रम है। यह केवल अतीत की जड़ता पर मंडराती प्रतिमाएं ही न होकर एक नवीन जीवन की यात्राा से सम्बन्धित एवं अतीत के बीच से भविष्य के वृक्ष के हेतु नवीन सम्भावनाओं के साथ निरन्तर समायोजन करती रहती है। यही परम्पराएं नवीन पीढ़ी के कलाकारों को अपनी जड़े तलाशने को प्रेरणा देती है।

'कला मानव मन के उत्कृष्ट भाव को जागृत करने की क्रिया है। मानव समाज की कुछ मान्यताएं यथा तिथि अनुसार निर्धरित होती है, उन निर्धरित कार्यक्रमों की पुनरावृत्ति को ही परम्परा कहा जाता है।[3] परम्परा के साथ मौलिक कला का वही सम्बन्ध है जो माता के गर्भ के साथ नवजात शिशु का। जन्म एक नवीन सष्जन है लेकिन यह सृजन गर्भावस्था की तमाम स्थितियों से नियमित होता है।'

जब हम किसी देश की कला का नाम लेते है तो हमारा ध्यान सहसा उस देश की कला परम्पराओं की ओर जाता है। पर देश अथवा जाति की कठोर सीमाएं कला में बहुत उदार हो जाती है।[4] यही कलाएं मानव की प्रगति का आधर बन हमारे समक्ष आती है इन्हीं की अपनी परम्पराएं, सिद्धान्त एवं विचार बन जाते हैं जिनका अनुशीलन करके ही आज का कलाकार आगे बढ़ता है। कला की परम्पराएं कला के लिये एक रीढ़रज्जु के समान है जो उसे दृढ़ खड़े रहने में सहायता प्रदान करती है। एक कलाकार अपनी प्राचीन परम्परा से अवगत होकर ही नवीन संसार की रचना करता है।

किसी भी देश साहित्य, दर्शन, संस्कृति आदि की अपनी एक अलग ही विशिष्ठ परम्परा होती है। किसी भी साहित्य व संस्कृति को आगे बढ़ने के लिये यह आवश्यक है कि उसकी सुदीर्घ परम्परा को बराबर ध्यान में रखा जाए। स्वाभाविक है कि अलग–अलग कला परम्पराओं में तूलिका की याददाश्त अलग–अलग हो और कलाकार अपनी विशेष कला परम्परा की निगाह से ही दुनिया को देखें। चीनी कलाकारों की सैकड़ों वर्षों की अपनी शैलियों की कलाओं में सर्वत्र, उनकी विविधताओं के बावजूद उनके तूलिका प्रयोग की विलक्षण प्रणाली की छाप देखी जा सकती है। इसी तरह भारतीय कला में अजन्ता के भित्ति चित्रों से यामनी राय तक में और कुछ हद तक अमृता शेरगिल में भी अभिव्यक्ति की समानता देखी जा सकती है जबकि अमृता शेरगिल का कला प्रशिक्षण पश्चिमी कला परम्परा में हुआ था।

किसी देश, समाज एवं धर्म का नाम लेते ही उसकी प्राचीन परम्पराओं के प्रति ध्यान आकृर्षित होता है। मन में यह उत्सुकता होती है कि उनकी प्राचीन परम्पराओं में क्या तथ्य समाहित है? इनकी प्राचीन भूमिका क्या रही है? प्राचीनता इस बात का प्रतीक है कि प्रमाणिकता को साबित कर सकती है। परम्पराओं का निर्वाह कला में सदैव होता आया है। भारत के अलावा अन्य देशों में भी कला परम्पराओं के प्रचलन की मान्यता रही है। वास्तविक दृष्टि से अगर हम यह कहे कि भारत की कला परम्परा से एशिया के देशों में प्रभाव पड़ा है तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी। यहाँ की संस्कृति व कला का प्रभाव यूरोप के देशों तक में देखा जा सकता है। यह उत्कृष्ट परम्परा हमें पूर्वजों की देन के रूप से उत्तराधिकार में प्राप्त हुई जिनके उच्च विचार व आदर्श इसमें निहित है। नई पीढ़ी को यदि अपना नवीन कला या आदर्श का निर्माण करना है तो उन्हे अतीत की तरफ मुड़कर देखना ही होगा। यही कारण है कि आज भारतीय कला की प्रशंसा विदेशो में हो रही है। अजन्ता गुफाओं की चित्रकला को विश्व प्रसिद्ध माना जाता है। भारत देश की संस्कृति, परम्परा एवं कला अपनी वास्तविकता को लिये हुए है। भारतीय कला एवं परम्परा एक विशाल सागर की तरह है। उस पर चिन्तन करने पर आभास होता है कि यहाँ की कला एवं परम्परा का स्वरूप कितना वृहद् है।

यामिनी राय की चित्रण परम्परा

प्राचीन परम्परा का निर्वाह कर चित्राण करने का यह अर्थ नहीं है कि आज का कलाकार नवीन अन्वेषण नहीं करके प्राचीनता को ही लिये बैठा है बल्कि वह परम्परा के अनुशीलन के साथ नवीन खोजे कर किसी देश के कलाकारों से पीछे नहीं है। भारतीय कला परम्पराओं को ऐसा साध्न माना गया है जिसके द्वारा कलाकार गम्भीर से गम्भीर बात को भी सहज भाव से कह जाता है। महान कलाकार किसी

न किसी रूप में किसी न किसी परम्परा से अवश्य ही जुड़ा रहता है। लोक कलाएं ही 'अभिजात कलाओं' की नींव है जिन पर कलोपजीवी कलाकार आश्रित रहे हैं। लोक महाकाव्यों, लोकगीतो, लोक कथाओं, निजंधरी तथा महावती की नींव पर उनके सुसंस्कृत रूप उभरे, ललित लोक कलाओं तथा लोक वास्तु की नींव पर अनेक सुकुमार कलाएं तथा नगरीय वास्तुकला उभरी, तथा लोकचित्रों के आधर पर कई कलादोलन उठे।[5]

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक चित्रों में परम्परा का आधार देखा गया है। प्रागैतिहासिक काल के चित्रों में उत्सवों के दर्शन मिलते हैं। रेखाचित्रों के माध्यम से प्रतीकात्मक अंकन में प्रागैतिहासिक कालीन चित्रकारों ने अपनी परम्परा का निर्वाह किया। सिन्धु सभ्यता का कलात्मक विकास उस समय की परम्परा के द्योतक है। अजन्ता गुफा चित्रों में भगवान बुद्ध के बौद्ध धर्म प्रचार की परम्परा गुफाओं में जीवित है। अपभ्रंश शैली के चित्रों में अपभ्रंश आकृतियों का अंकन स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। जैन शैली की चित्रण परम्परा से भी यह स्पष्ट होता है कि पश्चिम हिन्दु शैली अपनी तकनीक में विशिष्ट रही है। राजपूत शैली में राजपूत राजाओं के रण कौशल की परम्परा व राजमहलों का चित्रण उस समय की विषयवस्तु को दर्शाता है। मुगल शैली में मुगल बादशाहों का ईरानी शैली के द्वारा भारतीय शैली में चित्रण कार्य राजदरबार तक सीमित चित्रशैली की परम्परा दृष्टिगोचर होती है। मुगल शैली के पतन के उपरान्त पहाड़ी शैली में कलाकारों द्वारा चित्रा शैलियों को विकसित करने की परम्परा उजागर होती है। आधुनिक कलाकारों ने वर्तमान एवं परम्परागत आयामों को प्रतीकात्मक एवं अमूर्त आकृतियों में कलाकृतियों को सृजित करने की परम्परा उजागर की है। इस परम्परा का निर्वाह भारतीय कलाकार समाज की समस्याओं को अपने कैनवास पर सृजित करके उजागर कर सकता है जिससे दर्शक के मन में एक प्रेरणा जागृत होगी।

मुगल परम्परागत चित्रशैली

'मधुमास में जीवन्त वृक्ष अपने जीर्ण पत्तों को झाड़ देते हैं, उनके स्थान पर लाल–लाल नये कोपल उगने में समर्थ होते हैं। मृत पत्तों को डालों से चिपका देना परम्परा के मृत तत्वों को चिपका देना है, उन्हें पुनः स्थापित करने का प्रयास है। पर वास्तविक कलाकार जीवन्त और अजीवन्तः वास्तविक और भावुकतापरक तत्वों की पहचान में दक्ष होते हैं। इस प्रकार की दक्षता प्राप्त करना ऐतिहासिक चेतना प्राप्त करना है।[6]'

इस प्रकार हम देखते हैं कि परम्परा को छोड़कर आधुनिकता का कोई अर्थ नहीं बनता, कोई स्वतंत्रा अस्तित्व नहीं खड़ा होता। परम्परा आधुनिकता को आधार देती है, उसे अपने स्नेह–जल से सींचती है। उसका पालन–पोषण करती है। किन्तु

कुछ लोग दोनों में विरोध मानते हैं, जो ठीक नहीं। सही यह है कि परम्परा का विकास ही आधुनिकता है। आधुनिकता केवल विज्ञान के विकास से मिले साधनों का नाम नहीं है। न ही वह आज के यंत्रों से मिली जिन्दगी का नाम है, बल्कि वह दृष्टि है, जो आज और कल के संयोग से पैदा होती है। डॉ0 विद्यानिवास मिश्र ने आधुनिकता और परम्परा पर प्रकाश डालते हुए लिखा है आधुनिकता तुम्हारे आगे नहीं है, वह तुम्हारी बगल में है पर तुम आगे देख रहे हो। दायें–वायें तुम देखना नहीं चाहते, दायें–बायें से तुम बचना चाहते हो और पीछे देखने में शरमाते हो। कला परम्परा पर चिंतन करने से सौन्दर्य की वह सुखानुभूति होती है जिससे मानव मन भी उद्वेलित हो उठता है।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. *सोमैत्रि मोहन : समकालीन कला ललित कला अकादमी, नई दिल्ली। अंक 7–8/नव.1986–मई1987, पृ0–13*
2. *Haldar : Asit Kumar: Art and Tradition, The Unitersity Publisher, Lucknwo, 1952, Page-11*
3. *मावड़ी, डा0 मोहन सिंह : भारतीय कला सौन्दर्य, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली। 2002, पृ0–76*
4. *अग्रवाल, डा0 गिरजि किशोर : कला सौन्दर्य और समीता शास्त्रा, ललित कला प्रकाशन अलीगढ़, पृ0–137*
5. *मेघ, रमेश कुंतल : अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा, दि मैकमिलन कम्पनी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली। 177, पृ0–473*
6. *सिंह, डा0 इन्द्र बहादुर : सौन्दर्य और रचनाशीलता, अंनग प्रकाशन, दिल्ली। 2002, पृ0–138*